राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध

SOCIAL PERCEPTION OF HINDI WRITERS OF RAJASTHAN

हिंदी विभाग

(कला संकाय)

पी–एच.डी. उपाधि हेतु

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को प्रस्तावित

संशोधित शोध–प्रारूप की रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. मनीष रंजन

(सह–आचार्य, हिंदी)

राजकीय महाविद्यालय, रायपुर (भीलवाड़ा)

शोधार्थी

गौतम कुमार खटीक

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सत्र– 2017–18

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

REVISED OUTLINE OF PROPOSED RESEARCH WORK

प्रस्तावित शोध कार्य की संशोधित रूपरेखा

(1) शोधार्थी का नाम (अंग्रेजी में) : **GAUTAM KUMAR KHATIK**

(हिंदी में) : **गौतम कुमार खटीक**

(2) शोध विषय का शीर्षक (अंग्रेजी में) : **SOCIAL PERCEPTION OF HINDI WRITERS OF RAJASTHAN**

(हिंदी में) : **राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध**

3.Location : शोध–कार्य स्थल –

A. Department Where the Work is to be done : **Department of Hindi**, **Government College, Raipur Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer (Raj)**

हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, रायपुर
महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय ,
अजमेर

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए राजकीय महाविद्यालय, रायपुर (भीलवाड़ा) का चयन किया गया है। यहाँ कार्यरत शोध निर्देशक महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से शोध निर्देशक के रूप में पंजीकृत हैं। यह महाविद्यालय यू.जी.सी एवं राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत है । यहाँ शोध –कार्य करने संबंधी आधुनिक युग की इंटरनेट की सुविधा है तथा जिले के पुस्तकालय में अध्ययन और शोध सामग्री संकलन की सुविधा भी उपलब्ध है।

4. Introduction, Importance of Proposed Investigation, Objective :

परिचय , प्रस्तावित शोध का महत्त्व व उद्देश्य –

साहित्य और समाज में अन्योन्याश्रय संबन्ध माना जाता है। साहित्यिक आलोचकों ने साहित्य को समाज का दर्पण भी माना है। समाजशास्त्र में समाज शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ में किया गया है। यहाँ व्यक्ति–व्यक्ति के बीच पाये जाने वाले संबंधों के आधार पर निर्मित व्यवस्था को समाज कहा गया है। समाज संबंधों के ताने–बाने के रूप होता है और यह परिवर्तित होती रहने वाली जटिल अमूर्त व्यवस्था भी है। सामाजिक संबंधों में समय के साथ निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी कारणों से संबंधों के स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है। समाज के विचारों भाव भावनाओं और परिस्थितियों का प्रभाव साहित्यकार और साहित्य पर निश्चित रूप से पड़ता है। किसी कथाकार को समाजबोध की सटीकता उसे विशिष्ट बनाती है।

हिंदी कहानी साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसके आयाम विस्तृत हो जाते हैं। राजस्थान के हिंदी कथाकारों ने भारतीय समाजबोध की विविधता को रूपायित करने वाली कहानियों के माध्यम से अपनी खास पहचान बनायी। आरंभ में कहानीकारों की संवेदना के निश्चित मानदंड बन चुके थे, लेकिन बाद के कहानीकारों ने स्वतंत्रता के पश्चात समाज में आने वाले परिवर्तनों को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से परिलक्षित कर अभिव्यक्त किया।

स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने परिवर्तनशील भारतीय परिवेश, समाज की विषमताओं एवं विसंगतियों को अपनी कहानी में चित्रित करने का प्रयास किया। बीसवीं सदी के पाँचवें दशक से अब तक की कहानियों के आयाम विस्तृत हैं। ये कहानियाँ जीवन के विविध पक्षों को समेटना चाहती हैं। इस दिशा में कहानी के अंतर्गत शाश्वत मूल्यों के स्थान पर मानवीय मूल्यों की चर्चा अधिक मिलती है। आज के बदलते जीवन मूल्यों में संक्रमणशीलता का दौर भी मिल जाता है। आज भी मानव अपने समाज में परिवर्तन चाहता है और उसके लिए वह पुरातन रीति–रिवाज और परंपराओं को निरर्थक करार देता है।

राजस्थान के हिंदी कहानीकारो की कहानियाँ शहरी एवं ग्रामीण जीवन के अनछुए पहलुओं को उजागर करने वाली हैं। कुछ कहानियाँ बालमनोदशा, मजदूरों के संघर्ष, शोषित जीवन, बेरोजगारी, नैतिक मूल्य, विस्थापन, आदिवासी संस्कृति, सांप्रदायिकता, दलित पीड़ा एवं स्त्री आत्मनिर्भरता से लेकर स्त्री मुक्ति से जुड़ी अनेक समस्याओं का चित्रण करती हैं। इन कहानियों में जातिवाद पर प्रहार, भ्रष्ट व्यवस्था तंत्र के प्रति विद्रोह का भाव, लालफीताशाही एवं समाज के अंधे पथभ्रष्ट लोगों के विरुद्ध उनकी लेखनी का प्रतिकार दिखलाई पड़ता है। इन कहानीकारों ने व्यक्ति के अकेलेपन की त्रासदी, निशक्तजन के

संघर्ष एवं सवर्ण के बीच वैवाहिक संबंध दिखलाकर व्यापक भविष्य दृष्टि का परिचय देते हुए हिंदी कथा परंपरा को भी समृद्ध किया है। इसलिए इनका अध्ययन चुनौतीपूर्ण एवं विशिष्ट है।

कुछ कहानीकारों ने पीढ़ी–अंतराल को भी विषय बनाया है। पुरानी पीढ़ी की समझ और नई पीढ़ी की जरूरत में मेल नहीं बैठता। पुरानी पीढ़ी की दृष्टि में सबके साथ रहना बड़ी बात है तथा नई पीढ़ी के लिए यह समस्या बन जाती है। वे जिंदगी में नयापन ला कर जीवन को बेहतर बनाने की धुन में रहते हैं। कुछ कहानियाँ वरिष्ठ नागरिकों के साथ किए जाने वाले अवज्ञापूर्ण व्यवहार की शिकायत दर्ज करती हैं और समय के साथ नित्यप्रति बदल रहे संबंधों को प्रकट करती हैं। दूसरी ओर बाल–मनोविज्ञान को समुचित प्रसंगों और वातावरण के साथ प्रस्तुत करती एवं ग्रामीण अंधविश्वास, अभिशप्त धार्मिक जुनून और सांप्रदायिकता, शोषित जीवन की करुण मनोव्यथा को गंभीरता से उद्‌घाटित करती कहानियाँ भी हैं। अनकहे कथ्यों एवं विषयों के माध्यम से समाज में निरंतर चेतना पैदा करती ये कहानियाँ समाज को नई दिशा की ओर अग्रसर करने का प्रयास करती हैं। वे हताशा और वर्जना से मुक्त नए सामाजिक उत्थान तथा उनमें नए आयामों को सृजित करने के उद्देश्य की ओर अग्रसर हैं।

राजस्थान के हिंदी कहानीकारों ने समाज की हर उस गति को पकड़ने का प्रयास किया है जो आदमी के जीवन को प्रभावित करने का प्रयास करती है और जिससे वह उद्वेलित होता है। इस दृष्टि से यह शोध–कार्य अत्यंत चुनौतिपूर्ण है।

प्रस्तुत शोध–कार्य में बीसवीं सदी से अब तक राजस्थान के हिंदी कथाकारों के समाजबोध पर अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा।

1. बीसवीं सदी की कहानियों का अध्ययन एवं विश्लेषण कर समाज के मर्म को समझाना।
2. राजस्थान के हिंदी कहानीकारों की कहानियों में निहित सामाजिक मूल्यों की परख करना।
3. कहानी में शहरी–ग्रामीण जीवन, स्त्री, आदिवासी, दलित एवं पारिवारिक संबंधों जैसे बहुआयामी पक्षों का मूल्यांकन करना।
4. सामाजिक अवधारणा और स्तरों के तत्त्वों की पहचान कर उसकी मूल संवेदना पर प्रकाश डालना।
5. आधुनिक परिवर्तनों के फलस्वरूप समाज और व्यक्ति के संबंधों की दशा और दिशा की पहचान करना ।

5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study :

अध्ययन विषय पर पूर्व में किये गये शोधकार्य का पुनरावलोकन –

अतीत के संचित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन किया जाता है एवं उनके आधार पर शोध परियोजना की दिशा निर्धारित की जाती है। शोध को गति प्रदान करने के उद्देश्य से वैचारिक पोषक की आवश्यकता होती है । अतः इस संदर्भ मे शोध परियोजना की समीक्षा आवश्यक है।

पूर्व में इस विषय को केन्द्र मे रखते हुए शोध ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। ऐसा शोध विषय की नवीनता के चलते हुआ है। इन्दिरा सिंह : *स्वातंत्र्योत्तर महिला कहानीकारों की कहानियों में सामाजिक चेतना,* शशि पोद्दार ने *आधुनिक हिंदी कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन* व द्वारका प्रसाद वर्मा :*रांगेय राघव के कथा साहित्य में जनजीवन,* ओम प्रकाश भाटिया : *राजस्थान की समकालीन हिंदी कहानी और कहानीकार स्वंय प्रकाश,* सुमन कँवर : *हिंदी कहानियों में बदलती युवा मानसिकता* और अर्चना शर्मा : *आठवें दशक की हिंदी कहानी में नगरीय बोध* – जैसे ग्रंथ ही उपलब्ध हैं। लेकिन इन ग्रंथों में राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध पर समग्रतः किसी ने दृष्टिपात नहीं किया है। इसके अतिरिक्त इनमें संचार के नये माध्यमों–वेब पत्रिका आदि में प्रकाशित राजस्थान के कहानीकारों की हिंदी कहानियों को भी सम्मिलित नहीं किया गया है। अतः विवेच्य शोध–कार्य एक नूतन प्रयास के रूप में माना जा सकता है।

6. Research Gap identified in the proposed Field of Investigation (Based on the Review) :

प्रस्तावित शोध कार्य व पूर्व में किये गये शोध कार्य के अन्तराल का आकलन –

प्रस्तावित विषय पर किसी भी शोधार्थी ने एक समग्र अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया है। अभी तक हुए शोध कार्यों में कहानीकार विशेष, युवा मानसिकता, नगरीय बोध एवं जनजीवन विषय के एकांगी रूप ही मिलते हैं, लेकिन समग्र समाजबोध पर अभी तक किसी भी शोधार्थी की दृष्टि नहीं गई है। कहानी साहित्य पर जिस भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य हुआ है वह मेरे शोध कार्य के विषय से पूर्णतः भिन्न हैं।

अतः इस शोध कार्य में बीसवीं सदी के पाँचवें दशक से अब तक के राजस्थान के हिंदी कथाकारों की कहानियों का अध्ययन कर उनके समाजबोध पर शोध प्रस्तुत किया जाएगा। भारत के संदर्भ में यह कालखंड समाज में अनेक प्रकार के परिवर्तनों और ऊथल–पुथल से भरा है। किसी भी साहित्यकार के लिए ऐसे परिदृश्य का सामना चुनौतीपूर्ण होता है। विवेच्य शोध कार्य में राजस्थान के कथाकारों के द्वारा महसूस की गई इस चुनौती का अध्ययन किया जाएगा। इस शोध में कई ऐसे नए बिंदु उभरकर सामने आएँगे, जो अब तक प्रकट नहीं हुए हैं। इसलिए प्रस्तावित शोध, शोध–अंतराल को पाटने का कार्य करेगा।

7. **Major Hypothesis (If any): मुख्य परिकल्पना –**

राजस्थान के हिंदी कथाकारों के समाजबोध पर शोध की अवधारणा व्यापक रूप से सदैव परिलक्षित होती रही है। इसलिए इस अध्ययन से स्वाधीनता प्राप्ति के बाद की कहानियों के सामाजिक परिप्रेक्ष्य को परिलक्षित करने का प्रयास किया जाएगा।

शोध अध्ययनार्थ प्रस्तुत शोध प्रबंध में कहानीकारों के द्वारा प्रस्तुत तत्कालीन सामाजिक परिवेश को दर्शाया जाएगा। लेखक मानवीयता का पक्षधर होता है जो सामाजिक जड़ताओं को भेदने का कार्य अपनी लेखनी के माध्यम से करता है। भारतीय समाज के संश्लिष्ट स्वरूप की परख प्रस्तुत कालखंड की कहानी के माध्यम से की जाएगी।

8.Research Methodology : शोधपद्धति–

आधुनिक शोध में प्रसिद्ध विद्वान जोसफ गिबाल्डी की पुस्तक 'एम.एल.ए. हैंडबुक' को काफी महत्त्व प्रदान किया जाता है। शोधार्थी अपने शोध में इसका मुख्य रूप से प्रयोग करते हैं। प्रस्तावित शोध, इंडेक्स पद्धति (Index Method) से शोध कार्य करना उचित प्रतीत होता है। इस पद्धति में अधिक–से–अधिक संदर्भ ग्रंथों का संकलन किया जाता है और उन्हें एक साथ तर्कसम्मत क्रम में व्यवस्थित कर अध्ययन किया जाता है। इस आधार पर चिंतन का एक रूप विकसित होता है जो शोध को दिशा प्रदान करता है।

आंकड़ों का स्रोत –

1. प्राथमिक स्रोत – स्वातंत्र्योत्तर परिदृश्य के महत्त्वपूर्ण कहानीकारों का साक्षात्कार लेकर अपने शोध विषय के लिए नवीन सामग्री संगृहीत की जाएगी। ऐसे साक्षात्कार राजस्थान के कथाकारों के वैशिष्ट्य उद्घाटन में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करेंगे। इसके साथ–साथ लेखकों की रचनावली का आधार ग्रंथ के रूप में उपयोग किया जाएगा, जिससे उनके सृजन का आकलन सही ढंग से हो सके।

2. द्वितीयक स्रोत –

- कहानियों पर केंद्रित शोध प्रबंध ।
- कहानी आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में लिखी गई पुस्तकें।
- इस संदर्भ में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं एवं प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व इंटरनेट पर प्रकाशित उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जाएगा।

Tentative Chapter Scheme

प्रस्तावित शोध प्रबंध की अध्याय योजना

(प्रस्तावित शोध कार्य की अस्थायी अध्ययन योजना शोध की प्रगति, तथ्यात्मक उपलब्धियों व कारणों से संभावित कुछ परिवर्तनों के अतिरिक्त प्रस्तावित शोध कार्य के शीर्षक और उपशीर्षकों सहित अस्थायी अध्याय योजना निम्नलिखित है –)

राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध

1. प्रथम– अध्याय : समाजबोध : आशय एवं स्वरूप

(क) समाज की अवधारणा

(ख) समाज : लक्षण एवं अवयव

(ग) भारतीय समाज : एक अध्ययन

(घ) नयी सदी का समाज

मूल्यांकन

द्वितीय – अध्याय : हिंदी कहानी और राजस्थान के कथाकार

(क) हिंदी कहानी का आरंभ

(ख) हिंदी कहानी का विकास

(ग) राजस्थान के कथाकार

(घ) कहानी सर्वेक्षण

मूल्यांकन

तृतीय –अध्याय : समकालीन साहित्यिक विमर्श : कहानी के परिप्रेक्ष्य में

(क) उत्तर आधुनिकता : रूप निर्मिति

(ख) स्त्री–विमर्श : आरंभ, विकास और विस्तार

(ग) दलित विमर्श

(घ) आदिवासी और अन्य विमर्श

मूल्यांकन

चतुर्थ अध्याय : राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध : संवेदनात्मक अध्ययन

(क) राजस्थान के हिंदी कथाकारों की संवेदना के धरातल

(ख) सामाजिक जीवन के आयाम

(ग) स्त्री एवं बाल–मन

(घ) दलित एवं आदिवासी

(ड.) जीवन मूल्य

मूल्यांकन

पंचम अध्याय : राजस्थान के हिंदी कथाकारों का समाजबोध : शिल्पगत अध्ययन

(क) गद्य की संवेदनशीलता

(ख) भाषायी सृजनात्मकता

(ग) अंचल के शब्दों का प्रयोग

(घ) मुहावरें और लोकोक्तियाँ

मूल्यांकन

षष्ठ अध्याय – राजस्थान के हिंदी कथाकारों के समाजबोध की संभावनाएँ एवं सीमाएँ

उपसंहार

9.Reference cited : संदर्भ सूची–

(अ) आधार ग्रंथ

कहानी संग्रह

1. अशोक आत्रेय : *उदाहरण के लिए,* विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1986
2. आलमशाह खान : *साँसों का रेवड़,* पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1994
3. आलमशाह खान : *दस प्रतिनिधि कहानियाँ,* किताबघर प्रकाशन, 2014
4. केदार प्रसाद मीणा : *आदिवासी कहानियाँ,* अलख प्रकाशन
5. चरण सिंह पथिक : *बात यह नहीं है,* सूर्य प्रकाशन मंदिर, 2005
6. चरण सिंह पथिक : *मेरी प्रिय कथाएँ,* ज्योतिपर्व प्रकाशन, गाजियाबाद, 2014
7. दीप्ति कुलश्रेष्ठ : *किसे करें फरियाद,* लोक चेतना प्रकाशन, 2013
8. दीप्ति कुलश्रेष्ठ : *काश!,* लोक चेतना प्रकाशन, 2013
9. दीप्ति कुलश्रेष्ठ : *परिणति,* लोक चेतना प्रकाशन, 2013
10. भगवान अटलानी : *भगवान अटलानी की लोकप्रिय कहानियाँ,* प्रभात प्रकाशन, 2018
11. भगवान अटलानी : *बंद आसमान का आखिरी दरवाजा,* साहित्यागार जयपुर, 1987
12. मनीषा कुलश्रेष्ठ : *कुछ भी तो रूमानी नही,* अंतिका प्रकाशन, 2008
13. मनीषा कुलश्रेष्ठ : *किरदार,* राजपाल एंड सन्स, 2018
14. मनीषा कुलश्रेष्ठ : *कठपुतलियाँ,* भारतीय ज्ञानपीठ, 2010
15. यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' : *विशिष्ट कहानियाँ,* पराग प्रकाशन, 2008
16. यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' : *दस प्रतिनिधि कहानियाँ,* किताबघर प्रकाशन, 2003
17. यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र': *इक्यावन कहानियाँ,* पुस्तकायन, नई दिल्ली, 1984
18. यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' : *आदिम संस्कार,* साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
19. यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' : *प्यासों का रेगिस्तान,* साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
20. रत्नकुमार सांभरिया : *हुकम की दुग्गी,* रचना प्रकाशन, जयपुर, 2003
21. रत्नकुमार सांभरिया : *काल तथा अन्य कहानियाँ,* रचना प्रकाशन, जयपुर, 2008
22. रत्नकुमार सांभरिया : *खेत तथा अन्य कहानियाँ,* आधार प्रकाशन पंचकूला, हरियाणा, प्र. स. 2010, द्वि सं. 2012
23. रत्नकुमार सांभरिया : *दलित समाज की कहानियाँ,* अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स दरियागंज, दिल्ली, प्र.स. 2011, द्वि सं. 2014

24. रत्नकुमार सांभरिया : *एयरगन का घोड़ा,* अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स दरियागंज, दिल्ली, प्र.स. 2015
25. रमाकांत शर्मा 'उद्भ्रांत' : *उद्भ्रांत श्रेष्ठ कहानियाँ,* राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, 2015
26. रांगेय राघव : *प्रतिनिधि कहानियाँ,* राजकमल प्रकाशन, 2007
27. रांगेय राघव : *तूफानों के बीच,* राधाकृष्ण प्रकाशन, 2012
28. रांगेय राघव : *दस प्रतिनिधि कहानियाँ,* किताबघर प्रकाशन, 2015
29. रांगेय राघव : *मेरी प्रिय कहानियाँ,* राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, द्वि.सं. 1971
30. रांगेय राघव : *गदल और अन्य कहानियाँ,* किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 1992
31. राजेंद्र मोहन भटनागर : *चाणक्य की हार,* सुयोग्य प्रकाशन, दिल्ली, 1993
32. राजेंद्र मोहन भटनागर : *एक टुकड़ा धूप,* भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली, 1985
33. राजेंद्र मोहन भटनागर : *अंजाम,* नीतिका प्रकाशन, दिल्ली, 1998
34. राजेंद्र मोहन भटनागर : *राजेंद्र मोहन भटनागर की लोकप्रिय कहानियाँ,* प्रभात प्रकाशन, 2016
35. विपुल ज्वाला प्रसाद : *जगार,* सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली 2001
36. स्वयं प्रकाश : *मेरी प्रिय कहानियाँ,* राजपाल एंड सन्स, 2014
37. स्वयं प्रकाश : *स्वयं प्रकाश की लोकप्रिय कहानियाँ,* प्रभात प्रकाशन, 2016
38. स्वयं प्रकाश : *दस प्रतिनिधि कहानियाँ,* किताब घर प्रकाशन, 2013
39. स्वयं प्रकाश : *चर्चित कहानियाँ,* सामयिक पब्लिशर्स, 2012
40. स्वयं प्रकाश : *आदमी जात का आदमी,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
41. स्वयं प्रकाश : *अगली किताब,* परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 1988
42. हेतु भारद्वाज : *1986 प्रतिनिधि हिंदी कहानियाँ,* पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1986
43. हेतु भारद्वाज : *पटाक्षेप नहीं होगा,* पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1991

(आ) सहायक ग्रंथ

1. अनामिका : *स्त्री विमर्श का लोकपक्ष,* वाणी प्रकाशन, 2012
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : *हिंदी साहित्य का इतिहास,* नागरी प्रचारणी सभा, काशी, 2006
3. आलमशाह खान : *राजस्थान के कहानीकार,* राजस्थान साहित्य अकादमी, 1977
4. इंद्रनाथ मदान : *हिंदी कहानी एक नई दृष्टि,* संभावना प्रकाशन, हापुड़, 1978
5. इंद्रनाथ मदान : *हिंदी कहानी पहचान और परख,* लिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1993
6. कमलेश्वर : *नई कहानी की भूमिका,* शब्दकार, दिल्ली, 1978
7. कृष्णदत्त पालीवाल : *भारतीय अस्मिता और दृष्टि,* सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 2014

8. कृष्णदत्त पालीवाल : *उत्तर आधुनिकतावाद की ओर,* आर्य प्रकाशन मंडल, नई दिल्ली, 2016
9. गंगा प्रसाद विमल : *आधुनिक हिंदी कहानी,* भारत मुद्रणालय, दिल्ली, 1978
10. गोपाल राय : *हिंदी कहानी का इतिहास,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रं.सं. 2008
11. जगन सिहं : *आधुनिकता और हिंदी कहानी,* प्रासंगिक प्रकाशन, दिल्ली, 1980
12. डॉ. उषा गोयल : *हिंदी कहानी चरित्र चित्रण का विकास,* मंथन प्रकाशन, रोहतक, 1981
13. डॉ. प्रेमचंद नारायण : *आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में समसामयिक जीवन की अभिव्यक्ति,* अनुपम प्रकाशन, पटना, 1980
14. डॉ. धनंजय : *समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि,* अभिव्यक्ति प्रकाशन, 1970
15. डॉ. राधेश्याम गुप्त : *हिंदी कहानी का शिल्प विधान,* हि.सा. प्रकाशन,अजमेर, 1977
16. डॉ. लक्ष्मणदत्त गौतम : *आधुनिक हिंदी कहानी में प्रगति चेतना,* कोणार्क प्रकाशन, 1973
17. डॉ. विश्वंभर नाथ : *समकालीन कहानियाँ समाजदर्शन,* स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद , 1977
18. डॉ. साधना सिंह : *नई कहानी में आधुनिकता बोध*, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1978
19. डॉ. सुशीला मित्तल : *आधुनिक हिंदी कहानी में नारी की भूमिकाएँ,* अनुपमा प्रकाशन, बम्बई
20. देवराज उपाध्याय : *आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान,* साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1956
21. देवीशंकर अवस्थी : *नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति,* अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1968
22. दिलीप मेहरा : *हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श,* गीता प्रकाशन, हैदराबाद, 2011
23. दीपक कुमार पांडेय : *दलित विमर्श और हिंदी साहित्य,* लोक भारती प्रकाशन, 2017
24. नवल किशोर : *मानववाद और साहित्य,* राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, 1971
25. नामवर सिंह : *कहानी नयी कहानी,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
26. पद्म सिंह शर्मा : *हिंदी गद्य विधाएं और विकास*, साहित्य संस्थान, दिल्ली, 1970
27. प्रभा खेतान : *उपनिवेश में स्त्री,* राजकमल प्रकाशन, 2009
28. बच्चन सिंह : *आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986
29. बटरोही : *कहानी संवाद का तीसरा आयाम,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1983
30. भैरू लाल गर्ग : *स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में सामाजिक परिवर्तन,* चित्रलेखा प्रकाशन सोहबतिया बाग, इलाहाबाद
31. मृणाल पांडे : *परिधि पर स्त्री,* राजकमल प्रकाशन, 1998
32. माधव हाड़ा : *राजस्थान का हिंदी साहित्य,* राजस्थान साहित्य अकादमी,1993
33. रजनीश कुमार : *हिंदी कहानी के आंदोलन : उपलब्धियाँ और सीमाएँ,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1986

34. रमणिका गुप्ता : *आदिवासी : विकास से विस्थापन,* नेहा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2015
35. रमणिका गुप्ता : *आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी,* वाणी प्रकाशन, 2014
36. रघुवीर सिन्हा : *हिंदी कहानी समाजशास्त्रीय दृष्टि,* अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1977
37. रमेश चंद्र लवानिया : *हिंदी कहानी में जीवन मूल्य,* अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, 1973
38. राजेंद्र कुमार : *स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में ग्राम्य जीवन और संस्कृति,* परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, 1988
39. राजेंद्र यादव : *एक दुनिया समानांतर,* अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1966
40. राजेंद्र यादव : *कहानी स्वरूप और संवेदना,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1977
41. रामदरश मिश्र : *हिंदी कहानी एक अंतरंग पहचान,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1977
42. रामविलास शर्मा : *कथा विवेचना और गद्य शिल्प,* वाणी प्रकाशन, 2012
43. लक्ष्मणचंद चौहान : *आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में प्रगति चेतना,* कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली, 1972
44. लक्ष्मीकांत वर्मा : *राजस्थान का समकालीन कथा–साहित्य,* लोक चेतना प्रकाशन, 2015
45. लक्ष्मीनारायण लाल : *आधुनिक हिंदी कहानी,* हिंदी ग्रंथ रत्नाकार, मुंबई, 1962
46. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : *आधुनिक कहानी का परिपार्श्व,* साहित्य भवन प्रा.लि. इलाहाबाद, 1996
47. विजेंद्र प्रताप सिंह : *वंचित संवेदना का साहित्य,* आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2015
48. शिवकुमार मिश्र : *यथार्थवाद,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2009
49. श्याम सिंह शशि : *साहित्य और समाज,* राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2015
50. श्यामाचरण दुबे : *मानव और संस्कृति,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998
51. संत बख्त सिंह : *नयी कहानी कथ्य और शिल्प,* अभिनव भारती प्रकाशन, 1973
52. संत बख्त सिहं : *नयी कहानी नये प्रश्न,* साहित्यालोक प्रकाशन, 1981
53. सत्यकेतु : *हिंदी कथा साहित्य : एक दृष्टि,* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
54. सुमन राजे : *हिंदी साहित्य का आधा इतिहास,* भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2003
55. सुरेंद्र : *नयी : कहानी दशा, दिशा, संभावना,* अपोलो प्रकाशन, जयपुर, 1966
56. हरदयाल व नगेंद्र : *हिंदी साहित्य का इतिहास,* मयूरपेपर बैग, नई दिल्ली, 2016
57. हेतु भारद्वाज : *स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में मानव प्रतिभा,* पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1983
58. हेतु भारद्वाज : *स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी कहानी का विकास,* पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1987

शब्दकोश –

1. वृहत हिंदी कोश – कालिका प्रसाद, ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस

2. अंग्रेजी–हिंदी कोश – फादर कामिल बुल्के, एस.चंद, नई दिल्ली
3. पराग हिंदी शब्दकोश – डॉ.वेंकट शर्मा, पराग प्रकाशन, जयपुर
4. हिंदी संदर्भ कोश – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
5. सरल हिंदी शब्दकोश – सुमन कुमार, एलोरा प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, जयपुर

पत्रिकाएँ –

1. संबोधन– कांकरोली
2. संप्रेषण – जयपुर
3. कृति ओर– जयपुर
4. मधुमती– उदयपुर
5. अक्सर– जयपुर
6. कथादेश– नई दिल्ली
7. नया ज्ञानोदय – नई दिल्ली
8. साहित्य अमृत – नई दिल्ली
9. पहल– जबलपुर
10. हंस – नई दिल्ली
11. पूर्वग्रह– भोपाल
12. वागर्थ– कोलकाता
13. वसुधा– भोपाल

समाचार–पत्र –

1. राजस्थान पत्रिका, जयपुर
2. दैनिक भास्कर, जयपुर
3. दैनिक नवज्योति, अजमेर

(समस्त प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा इंटरनेट पर उपलब्ध शोध विषय सहायक सामग्री)

गौतम कुमार
हस्ताक्षर

दिनांक–12/07/2018

शोधकर्ता – गौतम कुमार खटीक

Outline Approved
हस्ताक्षर मय सील व दिनांक
शोध पर्यवेक्षक – डॉ. मनीष रंजन
सह–आचार्य, हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, रायपुर (भीलवाड़ा)

सह आचार्य
राजकीय महाविद्यालय
रायपुर (भीलवाड़ा)